



महर्षिवाल्मीकिसंस्कृतविश्वविद्यालयः

मौनधारा (मून्डडी), कपिष्ठल (कैथल), हरियाणा

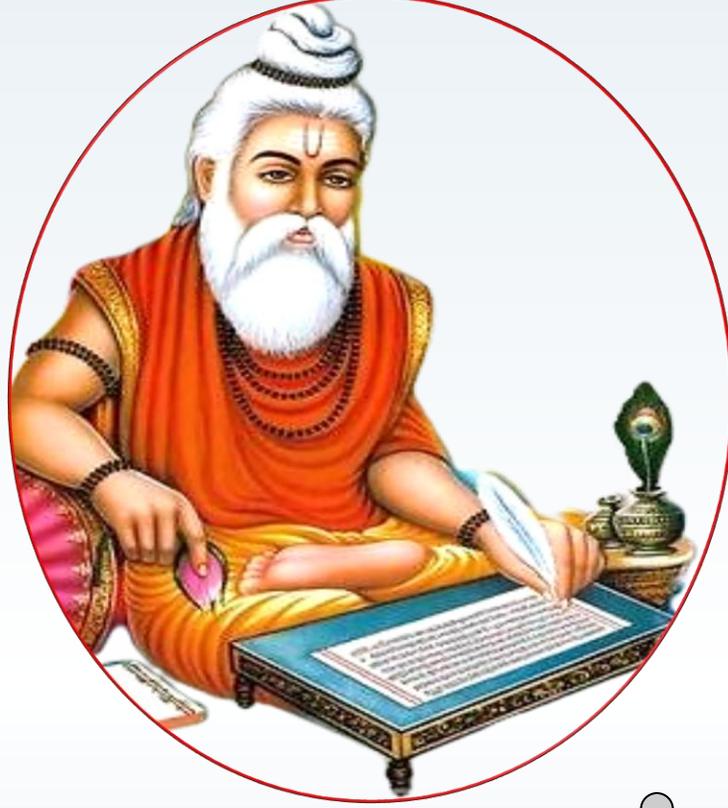
(हरियाणा सरकार के अधिनियम २०/२०१८ द्वारा संस्थापित एवं यू.जी.सी. की धारा २(एफ) के अन्तर्गत मान्यता प्राप्त)

मासिक ई-पत्रिका

महर्षि-प्रभा

योग
विशेषांक

अंक-१४
जून २०२३
विक्रमी संवत्
२०७९-८०



संरक्षक

श्री बंडारु दत्तात्रेय
(महामहिम राज्यपाल)

श्री मनोहरलाल खट्टर
(मुख्यमंत्री हरियाणा)

श्री मूलचन्द्र शर्मा
(माननीय उच्च शिक्षा मंत्री)

मार्गदर्शक

प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज
(कुलपति)

प्रो. बृज पाल
(कुलसचिव)

सम्पादक

डॉ. कृष्ण चन्द्र पाण्डे

सहसम्पादक

डॉ. अखिलेश कुमार मिश्र

डॉ. शर्मिला

डॉ. गोविन्द वल्लभ

वाल्मीकये नमस्तस्मै कवये रामसाक्षिणे ।
रामायणं लिखित्वा यः प्रथितो धरणीतले ॥



ई-मेल - maharishiprabhamvsu@gmail.com

समत्वं योग उच्चते

प्राचीन भारतीय विद्या 'योग' आज विश्व पटल पर पुनः अपने गौरव को प्राप्त हुई है। आज सम्पूर्ण विश्व योग के महत्त्व को समझ रहा है। 21 जून विश्व योग दिवस के रूप में सम्पूर्ण विश्व में मनाया जाता है। योग को एक शारीरिक क्रिया के रूप में तो विश्व में स्वीकृति मिल गयी। परन्तु अब उसके आगे योग को वास्तविक रूप में समझने और जीवन में आचरण की ओर बढ़ने की आवश्यकता है। योग के वास्तविक स्वरूप को भारतीय समाज को समझने की अधिक आवश्यकता है। क्योंकि योग केवल शारीरिक क्रिया मात्र नहीं है। शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास और सन्तुलन स्थापित करने की क्रिया योग है। योग न केवल शारीरिक क्रिया है, अपितु मानसिक क्रिया है और आध्यात्मिक क्रिया भी है। तीनों का समन्वय योग है। जीवन को सन्तुलित होकर जीने की कला को सिखाने की क्रिया योग है। इसलिए कहा गया है। **समत्वं योग उच्चते**



जीवन को प्रत्येक अवस्था में समत्वपूर्ण बनाए रखना योग है। उत्तरोत्तर मानवीय विकास की दिशा में अग्रसरित करने की क्रिया योग है। पशुत्व से मानवत्व, मानवत्व से देवत्व की ओर ले जाने का माध्यम योग है। उसी उत्तरोत्तर विकास क्रम को क्रिया के रूप में कर्ता की कार्य कुशलता को योग कहा गया है। अपने कार्य को कुशलतापूर्वक करने को योग कहा गया है। योग एकांगी नहीं है। योग को वास्तविक रूप में समझने की आवश्यकता है। महर्षि पतञ्जलि ने योग को चित्तवृत्ति का निरोधक माना है। 'योगः चित्तवृत्तिनिरोधः' अर्थात् चित्त की वृत्तियों को निरुद्ध करना योग है। मनुष्य की शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक उन्नति जिससे प्राप्त की जा सकती है वह योग है। ये त्रिविध उन्नति तब तक सम्भव नहीं है जब तक मन को निरुद्ध न किया जाए। मन बहुत चञ्चल है उसे वश में करना अत्यन्त कठिन है। परन्तु असम्भव नहीं है। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में उसको निरुद्ध करने का उपाय बताया है- अभ्यास और वैराग्य।

इस अभ्यास और वैराग्य की अवस्था को प्राप्त करने का माध्यम योग है। जब मनुष्य का मन अपने मुख्य लक्ष्य पर केन्द्रित हो जाए उस अवस्था को योग अवस्था कहा गया है। अपने लक्ष्य से पूर्ण रूप से जुड़ जाना योग है। जब हम अपने अभीष्ट से पूर्णतः जुड़ जाते हैं तो उस काम को हम कुशलतापूर्वक कर पाते हैं। अपने कार्य को कुशलता पूर्वक करना योग है। ऐसा गीता में भी कहा गया है। 'योगः कर्मसु कौशलम्'

महर्षि पतञ्जलि ने योग के आठ अंग बताये हैं जिन्हें अष्टांग योग के नाम से जाना जाता है। योग के आठ अङ्ग निम्न हैं। यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधिः। अर्थात् यम से लेकर समाधिः तक की यात्रा योग है।

आज अधिकांश लोग 'आसन' अवस्था को ही योग मानते हैं। जबकि आसन योग का एक अंग मात्र है। समाधि की अवस्था तक कैसे पहुँचा जा सकता है? योग की अवस्था कैसी है? इसे क्रमशः जानने का प्रयास करते हैं।

यम - योग की प्रथम अवस्था यम है। यम पांच बताए गये हैं। अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। महर्षि पतञ्जलि कहते हैं कि जो अहिंसा को जीवन में उतार लेता है उसके पास आकर सभी प्राणी वैर-भाव भूल जाते हैं। सत्य को जीवन में पालन करने से उसे वाक् सिद्धि प्राप्त हो जाती है। उसके मुख से निकली कोई भी बात निष्फल नहीं होती है। अस्तेय को जीवन में उतार लेने से उसे संसार की सभी सम्पत्तियां प्राप्त हो जाती हैं। ब्रह्मचर्य से शक्ति प्राप्त होती है। ब्रह्मचर्य ही शक्ति का मूल है और अपरिग्रह से पूर्व जन्म की स्मृतियां होने लगती हैं।

नियम - योग की दूसरी अवस्था नियम है। जीवन में कुछ नियमों का पालन आवश्यक है वे नियम हैं। 1. **शौच अर्थात् पवित्रता** - मन, वाणी और शरीर की शुद्धि शौच कहलाती है। 2. **सन्तोष** - सन्तोष अर्थात् सन्तुष्ट रहना किसी का लोभ न करना। जो वस्तु प्राप्त हुयी है उसी में सन्तुष्ट रहना। 3. **तप** - (परिश्रम) निरन्तर परिश्रम करना, कार्य सिद्धि तक अनवरत कार्य में निरन्तरता रखना। 4. **स्वाध्याय** - चिन्तन, मनन, आत्मस्मरण करना, स्वयं का निरन्तर परीक्षण करते रहना। और अन्तिम है 5. **ईश्वर प्रणिधान** - अर्थात् निरन्तर ईश्वर का स्मरण करते रहना। उसके साथ अपने स्वरूप का स्मरण करना। ईश्वर स्मरण से आत्मस्वरूप का ज्ञान होता है।

आसन - योग की तीसरी अवस्था आसन है। आज विश्व जिस योग क्रिया को करता है वह आसन मात्र है। आसन से शारीरिक शुद्धता एवं शरीर का मन के साथ सन्तुलन होता है।

प्राणायाम - प्राणायाम में शरीर की आन्तरिक विकृति दूर कर मन के साथ तादात्म्य स्थापित होता है और मन धारणा के योग बनता है।

प्रत्याहार - इन्द्रियों को बाह्य विषयों से हटाकर अन्तर्मुखी करने की क्रिया प्रत्याहार है। इसके अभ्यास से इन्द्रियां वश में हो जाती हैं।

धारणा - चित्र (मन) को किसी एक स्थान (विषय) में केन्द्रित करने की अवस्था धारणा है।

ध्यान - मन निरन्तर एक ही विषय पर केन्द्रित हो जाए उसे ध्यान अवस्था कहा जाता है। अर्थात् मन निरन्तर उसी विषय पर लगाये रखना ध्यान है।

समाधि - योग की अन्तिम अवस्था समाधि की अवस्था होती है। अपने अस्तित्व को भूलकर उस विषय में लीन हो जाना समाधि अवस्था है इसी को योग कहा गया है योगस्थ व्यक्ति को योगी कहा जाता है। कार्य की सिद्धि के लिए योगस्थ होना पड़ता है अर्थात् कार्य के प्रति पूर्ण तन्मयता से लगे रहना समाधि अवस्था है। इसी अवस्था में ही ज्ञान (कार्य सिद्धि) की प्राप्ति होती है इसी से कर्म के कुशलता आती है। इसी कर्म कुशलता को योग कहा जाता है।

अर्थात् कार्य को कुशलता पूर्वक करने का नाम योग है। कर्म कौशल्य के लिए उक्त सभी अवस्थाओं से गुजरना पड़ता है। इन सब अवस्थाओं में अनेक प्रकार की समस्याएं एवं कठिनाई आती हैं परन्तु सभी अवस्थाओं में समभाव रहना निर्विकार रहना ही योग है। कार्य की सिद्धि और असिद्धि दोनों अवस्थाओं में समभाव रहना इसी को समत्व कहा है। यह समत्व अवस्था ही योग है।

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा योग शिविरों का आयोजन

वर्तमान समय में सम्पूर्ण विश्व में सबसे अधिक लोकप्रिय यदि कुछ है तो वो योग है। भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के अथक प्रयासों के कारण 11 दिसंबर 2014 को, संयुक्त राष्ट्र के द्वारा 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मनाये जाने की घोषणा की गयी। तब से योग को सार्वभौमिक स्वीकार्यता हासिल हुई है। आज विश्व का कोई देश ऐसा नहीं है जहाँ योग की पहुंच नहीं है। आज के भागदौड़ एवं तनाव भरे जीवन में योग ने पूरे विश्व को जोड़ने का कार्य किया है। योग के माध्यम से व्यक्ति सबसे कम लागत में अपना स्वास्थ्य रक्षण कर सकता है। पूरे विश्व में योग का ढंका बजने के पश्चात भी हमारा ग्रामीण समाज व निचला तबका योग से अछूता है या पूरी तरह जागरूक नहीं है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए 9 वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज जी के कुशल नेतृत्व में कैथल जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में योग को लोकप्रिय करने एवं इन शिविरों के माध्यम से विश्वविद्यालयीय प्रचार-प्रसार करने हेतु योग विभाग को योग शिविर संचालित करने का दायित्व दिया गया। माननीय कुलपति जी का मानना है कि विश्वविद्यालय को समाज कल्याण के कार्यों के लिए सदा प्रयत्नशील रहना चाहिए। शिक्षा को बन्द कमरों से निकाल कर समाज तक ले जाना विश्वविद्यालय का मुख्य उद्देश्य है। गत वर्ष नौ स्थानों पर योग शिविरों का आयोजन हुआ था इस वर्ष उसको विस्तृत रूप देने की योजना बनी और बजट भी बढ़ाया गया। इस योजना को मूर्त रूप देने के लिए विभागाध्यक्ष डॉ रामानन्द मिश्र व डॉ. देवेन्द्र के संयोजन में एक टीम का गठन किया गया जिसमें डॉ. विनय गोपाल त्रिपाठी, डॉ. कुलदीप सिंह, डॉ. हरीश कुमार, डॉ. चन्द्र कान्त और श्री रोहित को सम्मिलित किया गया। इसके साथ-साथ एम. ए. (योग), बी. ए. (योग) एवं डिप्लोमा (योग) के विद्यार्थियों में आत्मविश्वास बढ़ाने, अध्यापन कौशल का विकास करने एवं योग का व्यवहारिक ज्ञान बढ़ाने हेतु इन शिविरों के माध्यम से प्रशिक्षण दिया गया।



(26 मई) शिव मन्दिर, टीक में प्रथम एक दिवसीय योग शिविर के अवसर पर मंज्वासीन मुख्यातिथि, विश्वविद्यालय के मा. कुलपति एवं शिविर में उपस्थित ग्रामिणों को योगाभ्यास करवाते डॉ. देवेन्द्र सिंह।



(27 मई) -राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय हरसौला गाँव में (बाँए) तथा (29 मई) डिवाइन ग्रेस पब्लिक स्कूल, ढांड में एक दिवसीय योग शिविर के आयोजन के अवसर पर छात्रों को योगाभ्यास करवाते डॉ. देवेन्द्र सिंह (दाँए)।



(31 मई) - जाखौली गाँव के राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय और आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में एक दिवसीय योग शिविर के अवसर पर योगाभ्यास करवाते आचार्य गिरिराज एवं अन्य योग शिक्षकगण।



(1 जून) - हेरिटेज स्कूल कैथल में एक दिवसीय योग शिविर के अवसर पर डिप्लोमा योग के छात्र (ममता, सीमा, रवि और सुमित) विद्यालय के छात्रों को योगाभ्यास करवाते हुए।



(2 जून) - राजकीय कन्या माडल संस्कृति विद्यालय, थाना गाँव में एक दिवसीय योग शिविर के अवसर पर योगाभ्यास करवाते योग शिक्षक।



(4 जून) - हुड्डा सैक्टर- 20, कैथल में एक दिवसीय योग शिविर के अवसर पर योगाभ्यास करवाते डॉ. देवेन्द्र सिंह तथा योगाभ्यास करते स्थानीय लोग।



(5 जून) - गाँव काकौत में स्थित प्रसिद्ध माता शाकुम्भरी देवी मन्दिर में एक दिवसीय योग शिविर में उपस्थित अतिथिगणों एवं ग्रामीणों को योगाभ्यास करवाते आचार्य गिरिराज एवं डॉ. देवेन्द्र सिंह।





(7 जून) नेहरू पार्क, नरवाना में योग शिविर के अवसर पर स्थानीय लोगों को योगाभ्यास करवाते डॉ. देवेन्द्र सिंह।



(6 जून) छोटूराम इन्डोर स्टेडियम, कैथल में एक दिवसीय योग शिविर के अवसर पर शिविर में उपस्थित खिलाड़ियों को सम्बोधित करते विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति महोदय।



(8 जून) राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, धमतान साहिब में एक दिवसीय योग शिविर के अवसर पर शिविर में भाग लेते विद्यार्थी एवं ग्रामीण।



(09 जून)- राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय फतेहपुर, पुंडरी (बाएँ) तथा (10 जून) बलवन्ती गाँव में एक दिवसीय योग शिविर के अवसर पर योगाभ्यास करवाते विश्वविद्यालय के योग शिक्षक।



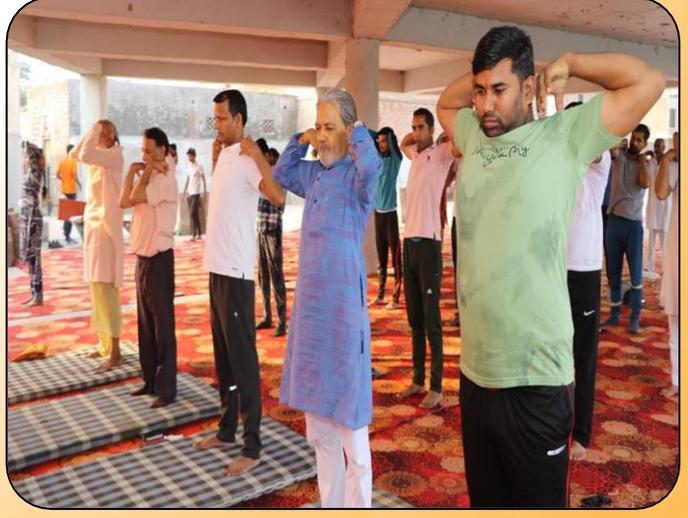
(12 जून)- पुण्डरी इन्डोर स्टेडियम में एक दिवसीय योग शिविर के अवसर पर खिलाड़ियों को योगाभ्यास करवाते आचार्य डॉ. देवेन्द्र सिंह।



(17 जून)- रा. मां. सं. वि, क्योड़क में योग शिविर में ग्रामीणों को योगाभ्यास करवाते विश्वविद्यालय के योगशिक्षक।



(20 जून)- निसिंग गाँव के शिव मन्दिर में एक दिवसीय योग शिविर के अवसर पर योगाभ्यास करवाते विश्वविद्यालय के योगशिक्षक।



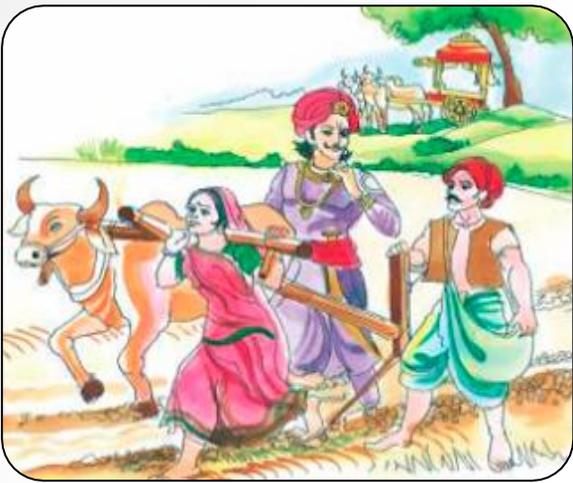
(21 जून) अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में गांव मूदड़ी में स्थित लव-कुश तीर्थ पर योग करते विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति महोदय, अधिकारीगण, कर्मचारिगण तथा छात्रगण।

विश्वविद्यालय परिसर में प्राकृतिक चिकित्सा कार्यशाला का आयोजन

(19 जून)- महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय ने आयोजित की प्राकृतिक चिकित्सा की कार्यशाला का आयोजन किया गया। वर्तमान समाज में अनेक प्रकार की बीमारियाँ फैल रही है जिनमे अधिकतर बीमारियाँ हमारी गलत दिनचर्या व गलत खानपान के कारण होती है। यदि हम अपनी दिनचर्या व खानपान को सुधार लें व प्रकृति के साथ सामंजस्य करके चले तो हम अनेक बीमारियों से बच सकते है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए माननीय कुलपति के दिशा निर्देश में योग विभाग के आचार्य डॉ देवेन्द्र सिंह ने योग विभाग के



विद्यार्थियों के लिए प्राकृतिक चिकित्सा की कार्यशाला का आयोजन करवाया। कार्यशाला में मुख्यवक्ता के रूप में डॉ विकास मोहन सक्सेना प्राकृतिक जीवन केन्द्र पट्टिकल्याना रहे। जिनका प्राकृतिक चिकित्सा के क्षेत्र में दो दशक से अधिक का अनुभव है। उन्होंने विद्यार्थियों को विभिन्न रोगों में मिट्टी चिकित्सा का उपयोग जिसके अंतर्गत मिट्टी पट्टी, मिट्टी लेप, मिट्टी स्नान की विधि बताई। उसके बाद जल चिकित्सा के अंतर्गत स्टीम बाथ, हिप बाथ, स्पाइन बाथ, गर्म ठंडा सेक की विधि व सावधानियों का ज्ञान करवाया। साथ में इन विधियों का प्रयोग किन किन रोगों में किया जा सकता है इसके बारे में समझाया। प्राकृतिक चिकित्सा में पेट व आँतों की सफाई बहुत महत्वपूर्ण है जिसके लिए एनीमा का प्रयोग किया जाता है। एनीमा में प्रयुक्त होने वाला जल रोगों के अनुसार तैयार किया जाता है। एनीमा के बारे में भी बहुत अच्छी प्रकार से विद्यार्थियों को समझाया। अंत में योग विभाग के आचार्य डॉ देवेन्द्र सिंह व आचार्य गिरीराज ने विकास जी को सम्मानित किया। इस अवसर पर श्री रोहित एवं बी.ए. एम. ए. योग के विद्यार्थियों ने कार्यशाला में सहभागिता की।



गम्भीर रूप से बीमार हैं। यह सुनकर वह खुशी से उछल पड़ा और बोला बताओ मुझे क्या बीमारी है। डॉक्टर ने कहा कि आपको एक रहस्यमयी बीमारी है और इसका इलाज यही है कि आप एक दिन के लिए किसी सुखी और प्रसन्न व्यक्ति की कमीज पहनें। लेकिन काफी खोजबीन के बाद सैनिकों को कोई सुखी और प्रसन्न व्यक्ति नहीं मिला। राजा को जब यह पता चला कि राज्य में कोई भी व्यक्ति सुखी नहीं है तो वह बहुत दुःखी हुआ। खैर एक दिन सैनिकों ने देखा एक व्यक्ति गाना गाते हुए मस्ती में अपने खेत में काम कर रहा है। सैनिकों ने उससे पूछा क्या आप अपने जीवन से प्रसन्न हैं। उस व्यक्ति ने कहा हाँ। यह सुनकर सैनिकों को बड़ी प्रसन्नता हुई और उन्होंने उस व्यक्ति से कहा कि क्या वह एक दिन के लिए अपनी कमीज राजा के लिए दे सकता है? यह सुनकर उसने कहा कि मैं अपनी कमीज राजा को अवश्य दे देता परन्तु मेरे पास इसके अलावा दूसरी कमीज पहनने के लिए नहीं है। अगले दिन राजा उससे मिलने के लिए जब महल से बाहर निकला तो उसे चिड़ियों की चहचहाहट, स्वच्छ वातावरण और नए नए चेहरों को देखकर उसे बहुत अच्छा लगा और वह अपने को स्वस्थ अनुभव करने लगा। कहने का अभिप्राय है कि, प्रकृति ने हमें सब प्रकार के उपहार दिए हैं उनका उपयोग वही व्यक्ति कर सकता है जो परिश्रम में विश्वास रखता है। परिश्रम ही मनुष्य की सच्ची पूजा है परिश्रम के बिना मनुष्य आलसी और शारीरिक और मानसिक रूप से बीमार हो जाता है।

परिश्रम

परिश्रम के बिना जीवन व्यर्थ है। परिश्रम किये बिना मनुष्य को भोजन भी नहीं करना चाहिए वरना वह बीमार पड़ जाता है। एक कहानी है जिसके अनुसार एक राजा वैभव पूर्ण जीवन व्यतीत कर रहा था लेकिन उसके बाद भी उसे लगता था कि वह बीमार है। ऐसे में जो भी डॉक्टर उससे कहता कि वह स्वस्थ है राजा उसे फांसी पर चढ़ाने का आदेश दे देता। अन्त में एक डॉक्टर ने उससे कहा कि आप

बाल गीतम



खेलति हंसः निर्मल नीरे
भ्रमति बालकः सागर तीरे,

वहति वायु सु उ सु उ
वदति कोकिला कुहु कुहु

कथयति काकः का आ का आ।
क्रन्दति बालः मा आ मा आ ॥

मत्स्यरंकः खादति मीनम्,
सिंहराजः खादति मांसम्।
मत्स्यरंकः उडयति गगने।
सिंहराजः वसति विविने ॥

स्वपिति सिंहः खेलति शशकः।
भ्रमति श्रृंगालः पश्यति काकः ॥

रजनी

एम. ए. (हिन्दू अध्ययन)

ज्योति देवी

एम. ए. (हिन्दू अध्ययन)

प्रश्नमञ्जरी

- (१) निरुक्त के लेखक-
- (क) मम्मट (ख) यास्क (ग) वल्लाचार्य (घ) सायण ।
- (२) 'गीतगोविन्द' के लेखक हैं-
- (क) जयदेव (ख) सोमदेव (ग) हरिदेव (घ) केशवमिश्र ।
- (३) 'भाति के भारतम्' काव्य के लेखक हैं-
- (क) ब्रह्मदेव शुक्ल (ख) विष्णुकान्त शुक्ल
(ग) कृष्णकान्त शुक्ल (घ) रमाकान्त शुक्ल ।
- (४) 'कालिदास चरितम्' नाटक के लेखक हैं-
- (क) डॉ वसुदेव त्रिवेदी (ख) श्रीराम वेलणकर
(ग) रमाकान्त शुक्ल (घ) वीरेन्द्र भट्टाचार्य
- (४) 'सेतुबन्धम्' नाटक के प्रणेता हैं-
- (क) अशोक कालिया (ख) डॉ. बलभद्र गोस्वामी
(ग) इन्द्रदेव द्विवेदी (घ) रामाशीष त्रिपाठी
- (६) 'विवेकानन्द विजयम्' के लेखक हैं-
- (क) व्यास राजशास्त्री (ख) दुर्गादत्त शास्त्री
(ग) जीवन्वास तीर्थ (घ) श्रीधर भास्कर वर्णेकर
- (७) राजनायक रुय्यक के ग्रन्थ का नाम है-
- (क) अलंकार शेखर (ख) अलंकार सूत्र
(ग) अलंकार संग्रह (घ) अलंकार सर्वस्य
- (८) वाचस्पति मिश्र की पत्नी का नाम था-
- (क) लीलावती (ख) भामती (ग) सरस्वती (घ) अवन्ति सुन्दरी
- (९) भास्कराचार्य की विदुषी पुत्री का नाम था -
- (क) लीलावती (ख) सरस्वती (ग) विजयांका (घ) रामभद्रा
- (१०) जैन आदिपुराण में किस तीर्थंकर की कथा वर्णित है -
- (क) शान्तनाथ (ख) वर्धमान (ग) मल्लिनाथ (घ) ऋषभदेव

(उत्तराणि अग्रिमे अङ्के)

(त्रयोदशङ्कस्य उत्तराणि)

- (1) भर्तृहरि (2) सायण (3) डॉ. रामनाथ सुमन (4) कामसूत्र (5) वैदर्भी
(6) अभिनव गुप्त (7) शिक्षा पत्री (8) 06 (9) योगशास्त्र (10) 3981



वृक्ष

सभी वृक्षों का मूल, छोटा सा बीज होता ।
फूटकर ही वह, अंकुरित होता ।
जन्म वह मिट्टी में लेता ।
प्यास भी लगती पानी की उसको, बस वह मुँह से पीता ।
आधी समानताएँ मानव से मिलती,
धीरे-धीरे उसकी कलियाँ खिलती ।
बहुत दूर तक जड़ें घूमती ।
कभी बेल, कभी पौधे के रूप में उगती ।
ऐसे-ऐसे वे अपना गृह बसा लेते,
बहुत सारे मिलकर जंगल बना देते ।
जैसे वे वृक्ष हुए घुमावदार छाँव दूर तक फैलती जाती ।
उनसे बहती सुगंधित हवा, हमारे मन को भाती ।
बागों में रंग-बिरंगे फूल खिलते,
लाल, पीले, गुलाबी अनेक रंग के मिलते ।
हिंदु इन्हें अपने इष्ट मानकर पूजते
ऐसे इन्हें लोग बहुत कम काटते ।
ऑक्सीजन देते, मगर एहसान नहीं जताते ।
मानव के दिए प्रदूषण को, अपने अंदर समाते ।
फिर भी लोग इनको नुकसान पहुँचाते ।
पता नहीं चलता ये वृक्ष कब बड़े हो जाते ।

शीतल देवी

आचार्य साहित्य (द्वितीय वर्ष)

सुभाषितान

शैले-शैले न माणिक्यं मौक्तिकं न गजे गजे ।

साधवो न हि सर्वत्र चन्दनं न वने वने ॥

हर एक पर्वत पर माणिक्य नहीं होते, हर हाथी के गण्डस्थल पर मोती नहीं होते, साधु सर्वत्र नहीं होते, हर वन में चन्दन नहीं होते, उसी प्रकार अच्छी चीजें हर जगह नहीं मिलती ।

सर्वं परवशं दुःख सर्वम् आत्मवशं सुखम् ।

एतत् विद्यात् समासेन लक्षणं सुख दुःखयोः ॥

जो चीज अपने अधिकार में नहीं है वह सब दुःख है । जो अपने अधिकार में है वह सुख है । संक्षेप में सुख दुःख का यही स्वाद है ।

आकाशत् पतित तोयं यथा गच्छति सागरम् ।

सर्वदेव नमस्कारः केशवं प्रति गच्छति ॥

आकाश से गिरा हुए जल विविध नदियों के माध्यम से सागर में मिलता है उसी प्रकार सभी देवों को किया हुआ नमन एक ही परमेश्वर को प्राप्त होता है ।

दुर्लभं त्रयमेवैतत् देवानुग्रहहेतुकम् ।

मनुष्यत्वं मुमुक्षुत्वं महापुरुष संश्रयः ॥

मनुष्य जन्म, मुक्ति की इच्छा तथा महापुरुषों की संगति ये तीनों परमेश्वर की कृपा पर निर्भर रहते हैं ।

यादृशैः सन्निविशते यादृशांश्चोपसेवते ।

यादृगिच्छेच्च भवितुं तादृग्भवति पुरुषः ॥

मनुष्य जिस प्रकार के लोगों के साथ रहता है, जिस प्रकार के लोगों की सेवा करता है, जैसा बनने की इच्छा करता है वैसा ही हो जाता है ।

महर्षिवाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालयः



मौनधारा (मून्डडी), कपिष्ठल (कैथल), हरियाणा
(हरियाणा सरकार के अधिनियम २०/२०१८ द्वारा संस्थापित एवं यू.जी.सी. की धारा २(एफ) के अन्तर्गत मान्यता प्राप्त)

पञ्जीकरण आरम्भ

आचार्य, एम.ए.

शास्त्री प्रतिष्ठा (B.A. Honors)
चार वर्षीय (NEP 2020)

अंशकालीन पाठ्यक्रम
(डिप्लोमा)

वेद
व्याकरण
ज्योतिष
साहित्य

दर्शन
धर्मशास्त्र
योग (M.A.)
हिन्दू अध्ययन (M.A.)

वेद
व्याकरण
ज्योतिष
साहित्य

दर्शन
धर्मशास्त्र
योग

योग
आयुर्वेद
ज्योतिष
वास्तुशास्त्र
संस्कृत भाषा दक्षता
वैदिक-गणित
वेद
पौरोहित्य (कर्मकाण्ड)

विश्वविद्यालय में अध्ययन करने के लाभ-

- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत स्नातक प्रतिष्ठा पाठ्यक्रम।
- क्षमता सम्बर्द्धन पाठ्यक्रमों का समावेश।
- रोजगार परक पाठ्यक्रमों का समावेश।
- कौशल सम्बर्द्धन पाठ्यक्रमों का समावेश।
- संस्कृत विषयों के साथ आधुनिक विषयों का अध्ययन।
- मूल्य योजना पाठ्यक्रमों का समावेश।
- हिन्दी व अंग्रेजी विषयों का भी पाठ्यक्रम।
- राजनीति, इतिहास वैकल्पिक विषय।
- शास्त्री प्रतिष्ठा करके प्रशासनिक सेवा की परीक्षा में बैठनें (I.A.S., I.P.S) का भी सुनहरा अवसर
- भारतीय सेना में धर्म शिक्षक (R.T./J.C.O) बनने का सुनहरा अवसर।
- चिकित्सा (द्विवर्षीय आयुर्वेद डिप्लोमा)
- संचार (सूचना-तकनीक)

विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क करें:-

वेबसाइट:- www.mvsu.ac.in संपर्क-सूत्र- 93500-45366

प्रवेश हेतु नीचे दिए गए पते पर सम्पर्क करें

कार्यालय परिसर- डॉ भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय
जगदीशपुरा (अम्बाला रोड़, कैथल- 136027) एवं
नूतन परिसर- महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल, हरियाणा
टीक परिसर, कुरुक्षेत्र रोड़, टीक

विशेष

विश्वविद्यालय में छात्र-
छात्राओं के लिए निःशुल्क
छात्रावास
एवं भोजनालय की
व्यवस्था भी उपलब्ध है।

डिप्लोमा

(एकवर्षीय)
शुल्क 6,000/-